ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 439-441

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

महाकवि नीलकण्ठ दीक्षित

ओम प्रकाश तिवारी

असि0 प्रोफे0–संस्कृत विभाग, श्री नीलम देवी पी0जी0 कालेज, धतुरी टोला, बैरिया–बलिया (उ0प्र0) भारत

Received- 06.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: tiwariomprakash1981@gmail-com

सारांश : (क) जीवन वृत्त– 17वीं शताब्दी में पैदा हुए कवि नीलकण्ठ दीक्षित अपनी कुछ असाधारण विशेषताओं से संस्कृत साहित्य का अनुशीलन करने वाले और अनुसन्धान करने वाले विद्वानों का चित्त विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। भास्कर प्रभा की तरह प्रकाशमान इनकी प्रतिभा लघुकाव्य, महाकाव्य, नाटक, चम्पू आदि विविध काव्य विधाओं का अवलम्बन करती हुई सब तरह से समुज्ज्वल रूप में सुशोभित होती है। इन्होंने सुप्रसिद्ध पण्डितों के कुलीन कुल में जन्म लिया था। दक्षिण भारत में भारद्वाज वंश में साक्षात् वाग्देवी के रूप में अवतार ग्रहण करने वाले महामीमान्सक विद्यावारिधि श्रीमान अप्पय दीक्षित महाशय नीलकण्ठ के पितामह तथा महापण्डितराज अच्चान दीक्षित के बड़े भ्राता थे। अप्पय दीक्षित की प्रतिभा पूर्व और उत्तर मीमांसा दोनों में असाधारण थी और उनकी भक्ति नीलकण्ठ भगवान शंकर के प्रति अगाध थी। व्याकरण शिरोमणि श्रीमान् भट्टोजि दीक्षित उनके विनयी शिष्य थे। अप्पय दीक्षित ने कुवलयानन्द, चित्रमीमांसा आदि 104 ग्रन्थों की रचना की थी और वे अपने प्रथित पाण्डित्य से आज भी दाक्षिणात्य विद्वानों में पूजे जाते हैं।1 नीलकण्ठ दीक्षित ने इनके विषय में अपने शिवलीलार्णव महाकाव्य में कहा है–

कालेन शम्भुः किल तावतापि, कलाश्चतुष्षष्ठिमिताः प्रणिन्ये।
द्वासप्ततिं समाः प्रबन्धा–अछतं व्यदधादप्पयदीक्षितीन्द्र : ।। (शिव0 1.3)

कुंजीभूत शब्द– असाधारण, संस्कृत साहित्य, अनुशीलन, अनुसंधान, प्रकाशमान, प्रतिभा, लघुकाव्य, महाकाव्य।

1. सागरिका 18.3, पृ0 3 शंकर भगवान की कृपा से इन्हें 64 कलाएँ प्राप्त थीं। अपनी 72 वर्ष के जीवन काल में श्री अप्पय दीक्षित ने 100 प्रबन्धों की रचना की।

इसी श्रीमान् अप्पय दीक्षित के छोटे भाई पण्डित प्रवर श्री अच्चान दीक्षित थे। इनके एक मात्र पुत्र भी नारायण अध्वरि ने भी पाण्डित्य में नाम कमाया था। इन्होंने साहित्य रत्नाकर, महावीरचरित आदि प्राचीन ग्रन्थों की रचना की। नारायण के पाँच पुत्र हुए। उनमें से नीलकण्ड दीक्षित द्वितीय थे। इनके चारों भाई सुकवि थे। उनमें से अतिरात्रयज्वा ने 'कुशकुमुद्वती' नाटक की रचना की।1 इस प्रकार नीलकण्ठ दीक्षित का कुल प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ था जिसका वर्णन कवि ने 'नलचरित्र' नाटक में विस्तार से किया है2–

पारिपार्श्विकः– अस्य किल कूटस्थाः साक्षात्कृतब्रह्माणः सर्वविद्यामुखाश्छन्दोगाः सोमपायिनोऽद्वैतवादासहिष्णवो वंशजाः जगद्विदिता एव। अमीष्वपि विशेषस्तत्रभवानच्चा दीक्षितः।

सूत्रधारः– तस्य किल कृष्णराजवन्दितचरणारविन्दस्य भारद्वाज कुल चूडामणेरष्टभिः क्रतुभि रायतनैः शम्भोरष्टभिर्ना मैरष्टभिस्तटाकैरष्टभिश्च सर्वविद्याविशारदैस्तनयैरष्टावपि दिशो यशोभिर्ज्वलिताः। तस्त पञ्चमः सूनुरद्वैतविद्यामुकुर–

विवरण–दपर्णाद्यनेक प्रबन्ध निर्माता शीलित एव रङ्. गराजाध्वरी।

पारि0–शीलित एव तस्य तपः परिपाक फल मखिल राज कमौलिविश्रान्तशासनश्चतुर–

धिकशतप्रबन्धनिर्माणसाहसी श्रीकण्ठमतनिर्वाहधूर्वहः श्रीमाननप्पयाध्वरी।

सूत्र0–ज्ञायते स कल्पतरुं व्याचक्षाणः सरसकविना यदस्तूयत बालकविना–

अप्पयदीक्षित किमिति स्तुति वर्णयामि भवतो बदान्यताम्।
सोऽपिकल्पतरुरर्थलिप्सया त्वद्गिरामवसरं प्रतीक्षते।।

1. नीलकण्ठ विजय, पृ0 10
2. सागरिका 18.3, पृ0 3

पारि0–केवलं तदेव। तदपि ज्ञायते यदेष शिवार्कमणिक्षेपिकावसानलब्धकनक स्नान प्रशंसितः साहित्यमार्गसम्प्रदायगुरुणा कविना समस्तपुंगवयज्वना–

हेमाभिषेक समये परितो निषण्णा
सौवर्ण संहतिमिषाच्चिनवोम्भूपः।
अप्पयदीक्षित मणेरनवद्य विद्या
कल्पद्रुमस्य कुरुते कनकालवालम्।।

सूत्र0–तत्सौन्दर्यस्य विद्वत्कवेरच्चादीक्षितस्य महिमा केन वर्ण्यते। तथापि किञ्चिद् वर्णितं गुरुरामकविना–

शब्दब्रह्माजगाहुर्षी जगृहुषी वैशेषिक साहुषी
तर्कोन्मर्दमुपेयुषी श्रुतिशिखां भाट्टे पदं दाशुषी।
सांख्यार्थानधिजग्मुषी विविदुषी साहित्यमर्माखिलं
कस्मिन्नस्य हि शेमुषी नृपसभे नापूपुषद् वैदुषीम्।। इति

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

तस्य पौत्रः साहित्यरत्नाकर, महावीरचरितादि प्रबन्ध व्याख्यातुः कविलोक चूड़ामणेरम्बिका पुरुषावतारस्य तत्र भवतो नारायणाध्वरिणो द्वितीयनन्दनो भूमिदेवीगर्भसंभव कविर्नीकण्ठः प्रणेतास्य प्रबन्धस्य। उक्तं च तेनैव कविना–

चन्द्रशेखर व्यासंगचरणोन्मार्जनाम्भसाम्
विवर्ता जगदुत्संगे विहन्ति मदुक्तयः।
नारायणाध्वरीन्द्राय नमोऽस्तु ज्ञानसिन्धवे
शारदा यत्कटाक्षाणां साप्यवेतनकिंकरा।।

पण्डित कुल में पैदा हुए श्रीनीलकण्ठ का विद्याध्ययन और संस्कार तद्नुरूप ही हुआ होगा, यह सहज ही ज्ञात होता है। महापण्डित अप्पय दीक्षित ने स्वयं ही इन्हें विविध विद्यायों को ग्रहण कराया जैसा कि उन्होंने स्वयं अपने ज्येष्ठ पितामह अप्पय दीक्षित के विषय में अपने ग्रन्थ 'त्यागराजस्तव' में लिखा है।

''योऽतनुतानुजसूनुग्रहेणात्मतुल्यमहिमानम्''

अर्थात् अप्पय दीक्षित ने अपने छोटे भाई के पुत्र (नीलकण्ठ) का अपने अनुग्रह से अपने समान महत्व वाला बना दिया। इस अनुग्रह के कारण नीलकण्ठ के मन में श्री अप्पय दीक्षित महाभाग के प्रति सातिशय श्रद्धा थी। प्रायः स्वरचित प्रत्येक काव्य में इन्होंने अप्पय दीक्षित महाभाग का पुण्य स्मरण किया है। गंगावतरण महाकाव्य में इन्होंने कहा है1–

मुनिरस्ति भरद्वाजः ख्यातःस्त्रिभुवनेष्वपि ।
अन्नैर्यस्य जहौ रामोऽप्यरण्यभ्रमणश्रमम्।।
तस्यान्वये महत्यासीत्क्षीरोद इव चन्द्रमाः ।
श्रीकण्ठचरणासक्तः श्रीमानप्पयदीक्षितः ।।
विधित्रयी यदाक्षिप्ता नान्यत्र लभते गतिम्।
जयन्त इव दुर्दान्तजानकीशशरार्दितः ।।
आगमैरज्यसंवेद्यमाद्यं यत् तत्वमैश्वरम्।
आकुमारं परिज्ञातं तदेवासीद्यदुक्तिभिः ।।
श्रीकण्ठदेशिक ग्रन्थ सिद्धांत द्योत चन्द्रिका।
श्रीमती निर्मिता येन शिवार्कमणिचन्द्रिका।।
गंगाया यः पुरा स्नातो देवश्चन्द्रार्धशेखरः ।
गांगेयेन पुनः सस्नौ सोऽवतीर्य यदात्मना।।
अमोषणीयैरक्रय्यैरमूल्यैरमलीमसैः।
यत्प्रबन्धैः शतेनैव भारती परिकल्पिता।।
यं विद्म इति यद् ग्रन्थानभ्यस्यामोऽखिलानिति।
यस्य शिष्याः स्म इति च श्लाघन्ते स्वं विपश्चितः ।।
नाकेऽपि सति देवानां माहात्म्यकलहे मिथः ।
वाद शाम्यति यद् वाचि विन्यस्य निखिलं भरम्।।
आमोदिभिर्वचः पुष्पैरर्चितो येन शंकरः।
तत्याज काशधत्तूरधारणोपहितां रुजम् ।।

1. सागरिका 18.3, पृ0 5.

इसी प्रकार 'शिवोत्कर्षमंजरी' के अंतिम पद्य में भी इन्होंने श्रीमान् अप्पय दीक्षित को अपन विद्यागुरु के रूप में याद किया है–

लीढालीढपुराण सूक्ति शकलावष्टम्भ सम्भावना
पर्यस्तश्रुति सेतुभिः कतिपयैर्नीते कलौ सान्द्रताम्।
श्रीकण्ठोऽवततार यस्य वपुष कल्क्यात्मनेवाच्युतः
श्रीमानप्पय दीक्षित : स जयति श्रीकण्ठ विद्यागुरुः।।

इतना ही नहीं बल्कि गंगावतरण और शिवलीलार्णव इन दोनों महाकाव्यों में प्रत्येक सर्ग के अन्त में श्रीमद्भरद्वाजकुलजलधिकौस्तुभ, श्रीकण्ठमतप्रतिष्ठापनाचार्य, चतुरधिकशतप्रबन्धनिर्वाहक और महाव्रत भाजी इत्यादि विशेषणों से विभूषित करके नीलकण्ठ ने श्री अप्पय दीक्षित को आदरपूर्वक याद किया है। वस्तुतः काव्य सर्जन में भी कवि ने अप्पय दीक्षित को ही प्रेरणास्रोत के रूप में माना है। गंगावतरण महाकाव्य को पूरा करते समय कवि ने लिखा है–

वाचं व्याकुरुते चिरन्तनगिरं मीमांसते चोभयीं
पान्थ : काव्यपथेषु पादकमले सक्तः पुरारेरिति।
मामेतत्कथयिष्यतीति रचितं काव्यं मया तत्पुन–
स्तावद् वक्ष्यति वा तदुपरि न्यस्तः समस्तो भर : ।।
(गंगा 118.92)

इसी प्रकार अपने पिता नारायण दीक्षित के प्रति भी इस कवि की विशेष आदर भावना हे, जैसा कि उन्होंने 'मुकुन्द विलास' में कहा है–

नमोऽस्तु नारायणदीक्षितेभ्यो न केवलं ये जनका ममैव ।
किन्तु त्रयाणामपि विष्टपानां गृहाश्रमेऽप्यात्रहस्यबोधात् ।।(मुकुन्द0 1.5)

ऐसे पिता, पितामह और ज्येष्ठ पितामह को पाकर कवि का इहलौकिक जीवन सफल हो गया। जिस प्रकार श्रीमान् अप्पय दीक्षित राजाओं के पूजनीय और युग वन्दनीय थे, उसी प्रकार नीलकण्ठ भी मदुरा नगरी में तिरुमलनायक राजा की सभा में पण्डितराज और अमात्य प्रवर थे। इनका एक दूसरा नाम अय्या दीक्षित भी है। इसी नाम से आज भी यह दाक्षिणात्य विद्वानों में स्मरण किये जाते हैं। जिस प्रकार नीलकण्ठ के पूर्वज थे वैसे ही उनके भाई और पुत्र भी विद्याओं में निष्णात और सुकवि थे। इनके भाइयों में से एक 'अतिरात्रयज्वा' ने 'कुशकुमुद्वती' नाटक का प्रणयन किया था। इसी प्रकार इनके तीसरे पुत्र 'श्री गीर्वाणेन्द्र' ने 'श्रृंगारकोषभाण' और अन्यापदेशशतक' की रचना की थी।' फिर भी समग्र कवित्व की दृष्टि से भारद्वाज वंश में जैसी प्रतिष्ठा नीलकण्ठ की है, वैसी प्रतिष्ठा अन्य किसी की भी नहीं है। इस प्रतिष्ठा का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि इस कवि के बड़े भाई ने कवि विरचित 'नलचरित्र' नाटक

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

पर स्वयं टीका लिखी। केवल कवित्व के क्षेत्र में ही नहीं अपितु शास्त्रानुशीलन में भी महाकवि नीलकण्ठ ने असाधारण नैपुण्य प्रदर्शित किया है। यह भी अप्पय दीक्षित की तरह श्रीकण्ठमत के मर्मज्ञ माने जाते हैं। श्रीसम्पन्न शैव सिद्धान्त में इनकी गहरी रुचि है। अप्पय दीक्षित के पश्चात् दोनों चोल राजाओं अच्युत नायक और रघुनाथ भूपाल के प्रधान अमात्य श्रीगोविन्द दीक्षित के पुत्र श्री वेंकटेश्वमखी से इन्होने विशेष रूप से विद्या ग्रहण की थी और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता को कवि ने गंगावतरण महाकाव्य में इस प्रकार व्यक्त किया है–

वर्तिकाभरणग्रन्थनिर्माण व्यक्तनैपुणः ।
श्रीवेंकटेश्वरमखी शिष्ये मय्यनुकम्पते ।।
कुर्वती श्रवणे वाणी कोमला यस्य साहितीम्।
कर्णपूरशिरीषेऽपि काठिन्यमिव पश्यति।।
भान्ति शिष्या पुरा यस्य पाणिविन्यस्तपुस्तकाः ।
तत्सूक्तिजाह्नवीपूरत्रासेनेव धृतप्लवाः।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर (एम0 कृष्णमाचारी), पृ0 236.

*****